भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख़्याल गायन में जुगलबंदी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रोफेसर डॉ सुनीता श्रीमाली

गायन संगीत

राजस्थान संगीत संस्थान

उच्च शिक्षा विभाग जयपुर

(राजस्थान सरकार)

dr.s.shrimali111@gmail.com

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख़्याल गायन एक अत्यंत समृद्ध और विकसित शैली है, जिसमें रचनात्मकता और भावनात्मक अभिव्यक्ति का गहरा समावेश होता है। इस शैली में जुगलबंदी का विशेष महत्व है, क्योंकि यह दो गायकों के बीच संवाद, प्रतिस्पर्धा और सहयोग का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस अध्ययन में ख़्याल गायन में जुगलबंदी की भूमिका, इसकी संरचना, शैलियाँ, और संगीत सौंदर्य शास्त्र पर इसके प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, यह अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालेगा कि जुगलबंदी किस प्रकार कलाकारों के तकनीकी और भावनात्मक अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाती है और श्रोताओं के लिए एक मंत्रमुग्ध करने वाला अनुभव प्रस्तुत करती है।

ख़्याल गायन, भारतीय शास्त्रीय संगीत ,जुगलबंदी , लयकारी, रचनात्मकता ,भावनात्मक अभिव्यक्ति ,सृजनात्मक संवाद

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में ख़्याल गायन एक प्रमुख शैली है, जो अपने रचनात्मक विस्तार, भावनात्मक अभिव्यक्ति और जटिल स्वर-संरचनाओं के लिए जानी जाती है। इस शैली में कलाकारों को स्वर, लय और ताल के माध्यम से अपने संगीत को मुक्त रूप से अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलती है। ख़्याल गायन द्रुत और विलंबित लय में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें आलाप, बोल-आलाप, तानें और लयकारी का प्रयोग प्रमुख होता है। इसे गायक अपनी कल्पना शक्ति और शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर सजाते हैं।ख़्याल गायन में जुगलबंदी एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरता है, जिसमें दो कलाकार आपसी संवाद के माध्यम से संगीत को नई ऊंचाइयों तक ले जाते हैं।

जुगलबंदी का स्वरूप और प्रभाव

भारतीय शास्त्रीय संगीत (विशेषकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत) में जुगलबंदी का मतलब है दो एकल संगीतकारों की युगल प्रस्तुति। यह ख्याल गायन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें दो गायक अपने बीच ताल और स्वर को साझा करते हुए एक साथ प्रदर्शन करते हैं। यह एक ऐसे प्रदर्शन को सक्षम बनाता है जो एकल गायन की तुलना में अधिक विविध और जटिल होता है। जुगलबंदी का अर्थ है दो गायकों के बीच तालमेल और संवाद का संगीतात्मक खेल। ख़्याल गायन में जुगलबंदी कई रूपों में देखी जाती है—

1.स्वर और आलाप की जुगलबंदी: इसमें दोनों गायक एक ही राग में स्वर-विस्तार करते हैं, जहाँ एक गायक आलाप शुरू करता है और दूसरा उसे नई दिशा में ले जाता है।

© 2025, IJSREM

2.तानों की प्रतिस्पर्धा: इसमें दोनों गायक तेज़ तानों की अदायगी में एक-दूसरे को चुनौती देते हैं, जिससे गायन में ऊर्जा और उत्तेजना बनी रहती है।

3.ताल और लयकारी का समन्वय: यह विशेष रूप से विलंबित और मध्य लय की बंदिशों में देखा जाता है, जहाँ दोनों गायक रचनात्मक रूप से ताल का प्रयोग करते है। ख़्याल गायन में जुगलबंदी केवल प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं, बल्कि एक सृजनात्मक संवाद भी है। यह संगीतकारों की परस्पर समझ, तकनीकी कौशल और सांगीतिक संवेदना को दर्शाती है, जिससे संगीत की अभिव्यक्ति और अधिक प्रभावशाली बन जाती है।

जुगलबंदी का अर्थ है "संगीत में संगत या प्रतियोगितात्मक सहयोग।" यह दो गायकों के बीच हो सकती है या फिर एक गायक और एक वाद्ययंत्र वादक (जैसे तबला, सारंगी, हारमोनियम या सितार) के बीच भी देखी जाती है। जुगलबंदी का उद्देश्य केवल प्रदर्शन नहीं, बल्कि संगीत की गहराई को उजागर करना और श्रोताओं को एक अनूठा अनुभव देना है। इसमें आलाप, तानें, सरगम, लयकारी और तालमेल का विशेष योगदान होता है, जिससे संगीत में विविधता और गतिशीलता आती है।

जुगलबंदी का इतिहास

भारतीय शास्त्रीय संगीत में जुगलबंदी की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है, लेकिन इसका सुव्यवस्थित रूप मध्य कालीन और आधुनिक हिंदुस्तानी संगीत में विकसित हुआ। जुगलबंदी का अर्थ है "संगीत में दो कलाकारों के बीच संवादात्मक प्रस्तुति," जिसमें दोनों कलाकार समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं और एक-दूसरे के संगीत का उत्तर देते हुए प्रस्तुतिकरण को रोमांचक बनाते हैं।

मुगल काल में जुगलबंदी

मुगल काल में ख़्याल गायन और ध्रुपद में जुगलबंदी का प्रारंभिक स्वरूप देखने को मिलता है। अकबर के दरबारी गायक तानसेन और उनके समकालीन संगीतज्ञों के बीच कई बार जुगलबंदी का उल्लेख मिलता है। इस दौर में वाद्य यंत्रों के साथ भी गायकों की जुगलबंदी प्रचलित हुई, विशेष रूप से रुद्र वीणा, सारंगी और पखावज के साथ।

18वीं और 19वीं सदी में जुगलबंदी का विकास:

ख़्याल गायन के प्रमुख घराने जैसे ग्वालियर, आगरा, जयपुर और पटियाला घराना में जुगलबंदी की परंपरा विकसित हुई। इस काल में कई मशहूर गायक जोड़ी में गाने लगे, जिससे ख़्याल गायन में जुगलबंदी अधिक लोकप्रिय हुई। साथ ही, तबला वादकों और गायकों के बीच भी लयकारी पर आधारित जुगलबंदी देखने को मिली।

20वीं सदी में जुगलबंदी का स्वर्ण युग :

20वीं सदी में जुगलबंदी एक प्रमुख शैली के रूप में उभरी। इस काल में उस्ताद बड़े ग़ुलाम अली ख़ाँ (पटियाला घराना) और उस्ताद अमीर ख़ाँ (इंदौर घराना) जैसे महान गायकों ने अपनी प्रस्तुतियों में जुगलबंदी का प्रयोग किया। इसके अलावा, उस्ताद अली अकबर ख़ाँ (सरोद) और पंडित रवि शंकर (सितार) जैसे वादक भी जुगलबंदी को नई ऊंचाइयों तक ले गए।

आधुनिक समय में जुगलबंदी

आज के समय में जुगलबंदी भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। ख़्याल गायन में दो गायकों के बीच जुगलबंदी के साथ-साथ गायन और वाद्य यंत्रों (सितार-सरोद, बांसुरी-सरोद, तबला-तबला) के बीच भी जुगलबंदी के कई प्रयोग हो रहे हैं। यह शैली न केवल परंपरागत संगीत कार्यक्रमों में, बल्कि वैश्विक मंचों पर भी लोकप्रिय हो रही है। जुगलबंदी का इतिहास भारतीय संगीत की परंपराओं में गहराई से निहित है। यह केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि आपसी संवाद, सौहार्द

और सांगीतिक रचनात्मकता को दर्शाने का माध्यम है। इसका निरंतर विकास भारतीय शास्त्रीय संगीत को अधिक गतिशील और समृद्ध बना रहा है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख़्याल गायन में जुगलबंदी का विश्लेषणात्मक अध्ययन कई सकारात्मक पहलुओं को उजागर करता है। ख़्याल गायन में जुगलबंदी का महत्व केवल कलात्मक प्रदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगीत की गहराई, संप्रेषणीयता और कलाकारों के बीच संवाद को भी बढ़ावा देता है। इसके प्रमुख सकारात्मक पहलू निम्नलिखित हैं:

1. रचनात्मकता और नवाचार

जुगलबंदी में दो गायकों (या वाद्य यंत्रों के साथ) के बीच तात्कालिक संवाद होता है, जिससे संगीत में नए प्रयोग और नवाचार की संभावनाएँ बढ़ती हैं। यह रचनात्मकता को बढ़ावा देता है और श्रोताओं के लिए एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है।

2. संगीत कौशल का प्रदर्शन

ख़्याल गायन में जुगलबंदी करने वाले कलाकार अपनी तालीम, रियाज़ और तकनीकी कौशल का प्रदर्शन कर सकते हैं। तानों, मींड, गमक, बोल-तान आदि के माध्यम से वे अपने संगीत ज्ञान और धैर्य को दर्शाते हैं।

3. कलाकारों के बीच संवाद और तालमेल

जुगलबंदी के दौरान कलाकारों के बीच तालमेल और संप्रेषण का स्तर उच्च होता है। यह संगीतकारों की परस्पर समझ, संवेदनशीलता और सौहार्द को बढ़ाता है, जिससे संगीत में गहराई आती है।

4. श्रोताओं के लिए आनंददायक अनुभव

ख़्याल गायन में जब दो कलाकार जुगलबंदी करते हैं, तो श्रोताओं को विविधता और नवीनता का अनुभव होता है। उनके बीच होने वाली रचनात्मक प्रतिस्पर्धा और सह-संगीत श्रोताओं को एक अलग स्तर की आनंदानुभूति प्रदान करता है।

5. संगीत परंपरा का संवर्धन

जुगलबंदी न केवल संगीत को समृद्ध करती है, बल्कि यह गुरु-शिष्य परंपरा, गायन शैलियों और रागों की विभिन्न व्याख्याओं को संरक्षित करने में भी सहायक होती है। यह ख़्याल गायन की परंपरा को आगे बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम है।

6. भावनात्मक अभिव्यक्ति का विकास

जुगलबंदी के दौरान कलाकार अपने गायन के माध्यम से गहरे भावों को व्यक्त करते हैं। यह शास्त्रीय संगीत की आत्मा को जीवंत बनाता है और विभिन्न रागों की अभिव्यक्ति को और भी प्रभावशाली बनाता है।

7. ताल और लय की समझ में वृद्धि

जुगलबंदी में ताल और लय का विशेष महत्व होता है। कलाकारों को एक-दूसरे के संगीत को समझते हुए अपने गायन को समायोजित करना पड़ता है, जिससे उनकी लयबद्धता और ताल-ज्ञान और भी सशक्त होता है।ख़्याल गायन में जुगलबंदी केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि सहयोग और संवाद का एक रूप है। यह संगीत की सुंदरता को और निखारता है, कलाकारों को सृजनशील बनाता है और श्रोताओं को एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करता है।

इस प्रकार, यह भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक विशेषता है। कई सकारात्मक पहलू होते हैं, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक पक्ष भी हो सकते हैं, जो कलाकारों, संगीत की प्रस्तुति और श्रोताओं के अनुभव को प्रभावित कर सकते हैं।

1. प्रतिस्पर्धात्मकता का बढ़ना

हालाँकि जुगलबंदी सहयोग और संवाद पर आधारित होती है, लेकिन कभी-कभी यह प्रतिस्पर्धा का रूप ले सकती है। यदि दोनों कलाकार अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए अत्यधिक प्रयास करने लगें, तो संगीत की सौंदर्यात्मकता प्रभावित हो सकती है।

2. संतुलन की कमी

यदि जुगलबंदी करने वाले दोनों कलाकारों की गायन शैली, रेंज, तकनीकी क्षमता या अनुभव में बड़ा अंतर हो, तो एक संतुलित प्रस्तुति देना कठिन हो सकता है। इससे श्रोताओं को असमानता का अनुभव हो सकता है और संगीत की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

3. संयम और संयोजन की कमी

कभी-कभी कलाकारों में तालमेल की कमी के कारण जुगलबंदी में असंगति उत्पन्न हो सकती है। यदि दोनों कलाकार अपनी स्वतंत्रता में अधिक लीन हो जाएँ और समन्वय न रखें, तो रचना का प्रवाह बाधित हो सकता है।

4. शास्त्रीय सौंदर्य का ह्रास

शास्त्रीय संगीत में राग की भावनात्मक और शुद्धता का विशेष महत्व होता है। यदि जुगलबंदी के दौरान अत्यधिक तानों, गमकों या लयकारी का प्रदर्शन किया जाए, तो राग की मूल भावना से भटकने का खतरा हो सकता है।

5. श्रोताओं के लिए बोझिल अनुभव

यदि जुगलबंदी बहुत लंबी हो जाए या बहुत जटिल हो जाए, तो श्रोताओं के लिए इसे समझना और आनंद लेना कठिन हो सकता है। कभी-कभी अत्यधिक तकनीकी के कारण आम श्रोताओं की रुचि कम हो जाती है।

6. अहंकार टकराव की संभावना

यदि दोनों कलाकार अपने गायन को श्रेष्ठ साबित करने की मानसिकता से जुगलबंदी करें, तो यह संगीत के आनंद के बजाय अहंकार की टकराहट बन सकती है। इससे प्रस्तुति की सुंदरता प्रभावित हो सकती है।

7. पारंपरिकता से भटकाव

कुछ कलाकार जुगलबंदी के दौरान नयापन लाने के प्रयास में पारंपरिक नियमों को तोड़ सकते हैं, जिससे शुद्ध शास्त्रीयता का उल्लंघन हो सकता है। इससे शास्त्रीय संगीत की परंपरागत गरिमा को नुकसान पहुँच सकता है।

ख़्याल गायन में जुगलबंदी के प्रसिद् कलाकार:

ख़्याल गायन में जुगलबंदी एक विशेष कला है, जिसमें दो गायक आपसी संवाद और तालमेल के साथ संगीत प्रस्तुत करते हैं। इस शैली को कई महान कलाकारों ने अपनाया और अपनी अनूठी जुगलबंदियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। कुछ प्रसिद्ध जुगलबंदी कलाकार निम्नलिखित हैं:

1. उस्ताद नज़ाकत अली खाँ और उस्ताद सलामत अली खाँ अपनी बेहतरीन जुगलबंदी के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी गायकी में अत्यंत तेज़ ताने, शानदार स्वर नियंत्रण और अभिव्यक्ति की गहराई देखने को मिलती थी। इनकी जुगलबंदी बेहद लोकप्रिय थी।

2. उस्ताद अमान अली खाँ और उस्ताद अमानत अली खाँ: किराना घराने के इन भाइयों की जोड़ी अपनी प्रभावशाली जुगलबंदी के लिए जानी जाती थी। विलंबित और द्रुत ख़्याल में इनका तालमेल अद्भुत था, और वे लयकारी में विशेष कौशल दिखाते थे।

3. पंडित राजन मिश्र और पंडित साजन मिश्र बनारस घराने के ये दो गायक भाई अपनी खास शैली और भक्ति भाव से भरपूर गायकी के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी जुगलबंदी अत्यंत सहज और गहरी होती थी, जिसमें भावनात्मक अभिव्यक्ति और मधुरता का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता था। उनकी प्रस्तुति में ठहराव और संयम के साथ-साथ तानों और आलापों का सुन्दर संयोजन रहता था।

4. उस्ताद ज़ाकिर हुसैन और उस्ताद राशिद खाँ वाद्य और गायन की जुगलबंदी भी बहुत प्रसिद्ध रही है। दोनों कलाकारों के बीच ताल-लय का उत्कृष्ट संवाद देखने को मिलता है, जो श्रोताओं को एक अनूठा अनुभव देता है।

5. उस्ताद गुलाम मुस्तफा खाँ और उनके शिष्य सोनू निगम जुगलबंदी में शास्त्रीय और सुगम संगीत का मिश्रण प्रस्तुत किया। यह जुगलबंदी भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास थी।

ख़्याल गायन में जुगलबंदी – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ख़्याल गायन में जुगलबंदी एक महत्वपूर्ण और जटिल कलात्मक प्रक्रिया है, जो गायकों के बीच संवाद, समन्वय और संगीत की गहराई को दर्शाती है। यह केवल तकनीकी कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक रचनात्मक यात्रा भी है, जिसमें दो कलाकार मिलकर संगीत को एक नई ऊँचाई तक ले जाते हैं।

जुगलबंदी के सकारात्मक पहलुओं में रचनात्मकता, संगीत संवाद, श्रोताओं के लिए रोचकता, तानों और लयकारी की विविधता तथा पारंपरिक शैली का संवर्धन शामिल हैं। यह ख़्याल गायन में एक नवीनता और ऊर्जा जोड़ता है, जिससे शास्त्रीय संगीत अधिक प्रभावशाली और गतिशील बनता है।

हालाँकि, इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हो सकते हैं, जैसे अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक, संतुलन की कमी, अहंकार का टकराव, पारंपरिकता से भटकाव और श्रोताओं के लिए कभी-कभी अत्यधिक जटिलता। यदि जुगलबंदी में सही तालमेल न हो, तो यह संगीत की सौंदर्यात्मकता को प्रभावित कर सकती है। इतिहास में कई महान कलाकारों ने ख़्याल गायन में जुगलबंदी की परंपरा को समृद्ध किया है। उस्ताद नज़ाकत अली खाँ – सलामत अली खाँ, पंडित राजन मिश्र – साजन मिश्र, और उस्ताद अमान अली खाँ – अमानत अली खाँ जैसी जोड़ियों ने इस शैली को एक विशिष्ट पहचान दी है।

निष्कर्ष

ख़्याल गायन में जुगलबंदी एक चुनौती पूर्ण कला है, जो केवल उच्च स्तर के समर्पित और प्रशिक्षित कलाकारों द्वारा सफलतापूर्वक प्रस्तुत की जा सकती है। उपरोक्त कलाकारों ने अपने संगीत के माध्यम से इस परंपरा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और श्रोताओं को अविस्मरणीय संगीत अनुभव प्रदान किया। ख़्याल गायन ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक अद्वितीय ऊँचाई दी है और उपरोक्त कलाकारों ने इसकी समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज भी कई नए कलाकार इस परंपरा को जीवंत बनाए हुए हैं। ख़्याल गायन में जुगलबंदी, जब संतुलित और भावनात्मक रूप से समृद्ध होती है, तो यह शास्त्रीय संगीत को एक नई ऊँचाई प्रदान करती है। यह कलाकारों के संवाद का एक अद्भुत माध्यम है, जो केवल गायकी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि संगीत के प्रति उनकी गहरी समझ और आत्मीयता को भी दर्शाता है। इसलिए, जुगलबंदी को केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि सहयोग और संगीत के सौंदर्य को निखारने का एक साधन माना जाना चाहिए।

(संदर्भ सूची)

1- डॉ.जगदीश सहाय कुलश्रेष्ठ , संगीत शास्त्र ,(2022) संगीत कार्यालय हाथरस page no.10,99-118

2. अनैदा नायक ,डॉ.श्यामा कुमारी, " Jasrangi-Redefining jugalabandi through moorchana" शोध पत्र , स्वर सिंधु, (दिसंबर 2024) Vol.12,issue 03,

3. डॉ श्रीमती रेनू राजन ,भारतीय शास्त्रीय संगीत के विविध आयाम ,(2021) अंकित पब्लिकेशन दिल्ली पेज न. 60

4. डॉ गवीश, khyal, past, present & future (2019) कनिष्क पब्लिकेशन दिल्ली पेज न.96- 157

5. डॉ .अशोक कुमार यमन ,भारतीय संगीत का इतिहास,भाग 2,(2014) के के पब्लिकेशन दिल्ली ,पेज न. 670-736